प्रज्ञा–प्रवाह

पाठमाला एवं अभ्यास पुस्तिका

5

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र

नारायण भवन, लाजपतराय मार्ग, कुरुक्षेत्र – 136118

दूरभाष : 01744 – 259941 ई – मेल : vbukkkr@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं वितरक

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र

नारायण भवन, लाजपत राय मार्ग, कुरुक्षेत्र-136-118

दूरभाष : 01744-259941 ई-मेल : vbukkkr@yahoo.co.in

वितरण-केन्द्र

भारतीय शिक्षा समिति, जम्मू कश्मीर प्रदेश

भारतीय विद्या मंदिर परिसर, अम्बफला, वेद मंदिर, जम्मू-180 005

दूरभाष : 0191-2547953

E-mail: bssjmu2006@yahoo.com
bssjk08gmail.com

सर्वहितकारी शिक्षा समिति, पंजाब

सर्वहितकारी केशव विद्या निकेतन, पठानकोट बाईपास, गुरु गोबिन्द सिंह एवेन्यू, नजदीक टेलीफोन एक्सचेंज, जालन्धर-144 009

दूरभाष : 0181-2421199, 2420876

E-mail: ses_jld@yahoo.co.in, ses.jld@gmail.com

हिमाचल शिक्षा समिति

हिम रश्मि परिसर, विकास नगर, शिमला-171 009 (हि.प्र.)

दूरभाष : 0177-2624624, 2620814

E-mail: shikshasamiti@sancharnet.in
himachalshikshasamitishimla@gmail.com

हिन्दू शिक्षा समिति, हरियाणा

संस्कृति भवन, गीता निकेतन आवासीय विद्यालय परिसर, लाजपत राय मार्ग, कुरुक्षेत्र-136 118 (हरियाणा)

दूरभाष : 01744-290241, 291156

E-mail: hsskkr@yahoo.co.in

ग्रामीण शिक्षा विकास समिति, हरियाणा

संस्कृति भवन, गीता निकेतन आवासीय विद्यालय परिसर, लाजपत राय मार्ग, कुरुक्षेत्र-136 118 (हरियाणा)

दूरभाष : 01744-290241, 291156

E-mail: gsvskkr@yahoo.co.in

हिन्दू शिक्षा समिति-दिल्ली

डी.ए.वी.व.मा. विद्यालय क्र. 2, शंकर नगर, दिल्ली-110 051

दूरभाष : 011-22008542

E-mail: hindushikshasamiti@gmail.com

हिन्दू शिक्षा समिति न्यास

गीता बाल भारती परिसर, राजगढ़ कॉलोनी, दिल्ली-110 031

दूरभाष : 011-22002957

E-mail: mahamantri_nyas@yahoo.co.in

समर्थ शिक्षा समिति-दिल्ली

सरस्वती शिशु/बाल मंदिर परिसर, (डेसू कार्यालय के पास) आरामबाग, पहाड़गंज, नई दिल्ली-110 055

दूरभाष : 011-23631247, फैक्स : 23631216

E-mail: samiti59@yahoo.com

प्रथम संस्करण : 2017

वैधानिक चेतावनी

यह पुस्तक विद्या भारती उत्तर क्षेत्र द्वारा प्रकाशित है। इस पुस्तक का प्रत्येक भाग सर्वाधिकार सुरक्षित है।

मुद्रक:

बुलबुल प्रिंटिंग प्रैस

136-140/55, औद्योगिक क्षेत्र, चण्डीगढ़

दूरभाष: 09988338711 ई-मेल: bulbulpress@gmail.com

लेखक : सन्तोष कुमार त्रिवेदी
एम.ए. (राज.शास्त्र, हिन्दी) बी.एड.
शैक्षिक प्रमुख
विद्या भारती, हरियाणा

संदेश

प्रज्ञा-प्रवाह नामक यह पाठ्य-पुस्तक कक्षा पञ्चमी के लिए श्री संतोष कुमार त्रिवेदी द्वारा संकलित की गई है। पुस्तक सरल एवं सुबोध है, प्रत्येक पाठ जीवन मूल्यों का प्रतिपादन करता दिखाई देता है। व्यक्तित्व विकास के सभी पहलुओं को स्पर्श किया गया है।

आचार्यों तथा अभिभावकों के सुझावों के आधार पर इसका द्वितीय संशोधित संस्करण अपके हाथों में सौंपते हुए मैं हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ।

मेरा मानना है कि सुधार की प्रक्रिया निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। अत: इस पुस्तक को पूर्णता की ओर बढ़ाने हेतु अपने अमूल्य सुझाव भेजने में संकोच न करें। निश्चय ही प्रत्येक संस्करण अपने पिछले संस्करण से अधिक उपयोगी होगा।

रत्नचन्द सरदाना

प्रकाशन प्रमुख

विद्या भारती, उत्तर क्षेत्र

कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

प्रस्तावना

इस पुस्तक के अध्ययन से भैया/बहिन स्वतन्त्र चिन्तन द्वारा भाषा सीखने और समझने में नैसर्गिक क्षमताओं का रचनात्मक प्रयोग करने में सक्षम होंगे। पाठ्य वस्तु परीक्षा आधारित न होकर मूल्य आधारित बने तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (N.C.E.R.T) के मानकों के अनुरूप बनकर भाषा के चारों कौशलों (श्रवण, वाचन, पठन एवं लेखन) में अभिवृद्धि करने वाली सिद्ध हो ऐसा प्रयास है।

कल्पना शक्ति एवं सृजनात्मकता का विकास सहज रूप में हो, इस दृष्टि से भाषा सरल, सहज, स्पष्ट एवं सुबोध बने इसका ध्यान रखा गया है। अध्ययन-अध्यापन में अभिरुचि के जागरण हेतु चित्रों की साज-सज्जा तथा भैया/बहिनों की आयु एवं ज्ञान के स्तर को ध्यान में रखते हुए - कविताएँ, कहानी, गीत, लेख एवं संस्मरण इत्यादि का चयन किया गया है।

समय के साथ रुचियों/अभिरुचियों का परिवर्तन, परिवर्धन अवश्यम्भावी है परन्तु जीवन मूल्यों का आधार ही शिक्षा को सोद्देश्य गतिमान करने में सक्षम हुआ है। शिक्षण सूत्रों-'सरल से कठिन की ओर', 'ज्ञात से अज्ञात की ओर', 'निश्चित से अनिश्चित की ओर' तथा शिक्षण युक्तियाँ-व्याख्या, कहानी, प्रश्नोत्तर, सहगान आदि के आधार पर पाठ्य सामग्री का चयन किया गया है।

सभी पाठों में अभ्यास कार्य के अन्तर्गत शिक्षणेतर गतिविधियों को विशेष स्थान देकर-सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (C.C.E पैटर्न) के मानकों को भी दृष्टिगत किया गया है।

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पुस्तक अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त करेगी। आप सभी के बहुमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी तथा हृदय से मैं उनका स्वागत करूँगा।

जिन ज्ञात-अज्ञात लेखकों, कवियों की रचनाओं का समावेश इस पुस्तक में किया गया है उन सबके प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

सन्तोष कुमार त्रिवेदी
एम.ए. (राज.शास्त्र, हिन्दी) बी.एड.
शैक्षिक प्रमुख, विद्या भारती, हरियाणा

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	पाठ		पृष्ठ संख्या
1	भारत प्यारा देश हमारा	गीत	1
2	गीता का उपदेश	संवाद	5
3	पं. दीनदयाल उपाध्याय	जीवनी	12
4	मेरा परिचय	कविता – अटल बिहारी वाजपेयी	17
5	हरियल ने रटना छोड़ा	निबंध	20
6	परमाणु कार्यक्रमों के प्रणेता	जीवनी	26
7	रोटी और स्वाधीनता	कविता – रामधारीसिंह 'दिनकर'	30
8	मर्यादा	निबंध	34
9	गुणों का सम्मान	निबंध	39
10	यह कदम्ब का पेड़	कविता – सुभद्रा कुमारी चौहान	44
11	सच्ची लगन	निबंध	48
12	कर्मवीर	कविता – अयोध्या सिंह उपाध्याय "हरिऔध"	53
13	चार मित्र	कहानी	57
14	बच्छराज और वनराज	कहानी	62
15	लकीर के फकीर	निबंध	67
16	दोहे	काव्य – कबीर दास, तुलसीदास, रहीम दास	71
17	मन की एकाग्रता	चित्रकथा	76
18	सम्राट पृथ्वीराज चौहान	जीवनी	80
19	चिड़ियाँ कहाँ गईं	कविता – अनुपमा	84
20	यज्ञ का घोड़ा	बालकथा	88
21	दो बैलों की कथा	कथा – मुंशी प्रेमचंद	92
22	हिम्मत हारे मत बैठो	गीत	96
23	सत्य, अहिंसा और स्वच्छता	लेख	100
24	एक कहानी	कहानी	104

विशेष–शिक्षक/शिक्षिकाएँ पाठों का आदर्श वाचन, अनुकरण वाचन, तथा उच्चारण में शुद्धता का अभ्यास विशेष ध्यान देकर करवाएँ।

पाठ 1

भारत प्यारा देश हमारा

प्यारा भारत देश हमारा, तन-मन इस पर वारेंगे ।।ध्रु०।।

गंगा, यमुना नदियाँ बहतीं, फल-फूलों से लदी है धरती,
इस धरती पर जन्म लिया है, माता इसे पुकारेंगे।। 1 ।।

सागर इसके चरण है धोता मुकुट हिमालय शोभा देता,
इस पर पलकर बड़े हुए हैं, इसका मान बढ़ाएँगे।। 2 ।।

श्वास-श्वास में पवन है जिसकी, रोम-रोम में अगन है जिसकी,
जिसका हम पर इतना उपकार, सब मिलकर गुण गाएँगे।। 3 ।।

कोटि- कोटि हैं इसके वासी, फिर क्यों छाई आज उदासी,
काँप उठेंगे शत्रु सारे, सब मिल जब ललकारेंगे।। 4 ।।

एक मान हिन्दुत्व है जिसका, एक प्राण हिन्दुत्व है जिसका,
ऐसे भारत पर प्राणों की, सब मिल बलि चढ़ाएँगे।। 5 ।।

अभ्यास

1. शब्द ज्ञान :-

वारेंगे - समर्पण/न्योछावर करेंगे
कोटि-कोटि- करोड़ों
बलि चढ़ाएँगे- न्योछावर हो जाएँगे
पवन- हवा
रोम-रोम - शरीर का छोटे से छोटा भाग
वासी-रहने वाले
उदासी-निराशा
अगन-आग
हिन्दुत्व - हिन्दूपन

❄ संकलनात्मक एवं रचनात्मक मूल्यांकन ❄

2. मौखिक प्रश्न :-

क. कविता का शीर्षक बताइए?

ख. 'हिमालय' की किससे उपमा की गई है?

ग. 'रोम-रोम में अगन है जिसकी' का भावार्थ क्या है?

घ. भारत की धरती को माता क्यों कहते हैं?

3. अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

क. भारत का मुकुट किसे कहा है?

.....

ख. श्वास और रोम किन दो महातत्वों से बने हैं?

.....

ग. भारत में रहने वालों की संख्या कविता में कितनी बताई है?

.....

घ. हम ऐसा क्या करें जिससे देश के शत्रु काँपने लगें?

.....

ङ हम अपने देश पर किसकी बलि चढ़ाएँगे?

.....

4. रिक्त स्थानों में उचित शब्दों को भरिए :-

भारत प्यारा ..... हमारा, तन, मन इस पर .....।

..... जिसके ..... है धोता, मुकुट ..... शोभा देता।

जिसका हम पर इतना ....., सब ..... गुण गाएँगे।

ऐसे ..... पर प्राणों की, सब ..... बलि चढ़ाएँगे।

5. अधोलिखित भाव की दोनों पंक्तियों को लिखिए :-

भारत देश की जनसंख्या करोड़ों में है, फिर देश में निराशा का वातावरण अच्छा नहीं लगता। हम शक्तिशाली होते हुए क्यों निराश हों? हम सब मिलकर हुँकार भरें। शत्रुओं की सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाएगी तथा वे थरथराने लगेंगे।

.....

.....

6. लघु उत्तरात्मक प्रश्न :-

च. सब मिलकर क्या गाएँगे? = ----------

छ. दो नदियों के नाम लिखिए= ----------

ज. भारत के चरण कौन धोता है? = ----------

झ. मुकुट किसे कहा गया है? = ----------

ञ. कौन काँप उठेंगे? = ----------

7. शब्दों को उनके सार्थक शब्दों से मिला दीजिए :-

क.	प्राण	क.	पवन
ख.	शत्रु	ख.	अगन
ग.	श्वास	ग.	माता
घ.	रोम-रोम	घ.	काँपना
ङ	भारत	ङ	बलि

8. अधोलिखित प्रश्नों के सही विकल्प पर (✓) चिह्न लगाइए -

क. कविता में किन दो नदियों का उल्लेख किया गया है?

अ. सरस्वती, नर्मदा ☐ आ. सरयू, कावेरी ☐ इ. गंगा, यमुना ☐

ख. हम अपनी मातृ भूमि को क्या कहकर संबोधित करते हैं?

अ. माता ☐ आ. दादी ☐ इ. बुआ ☐

ग. भारत वर्ष के चरण कौन धोता है?

अ. हिमालय ☐ आ. सागर ☐ इ. पवन ☐

घ. हमारे देश का मुकुट किसे कहा जाता है?

अ. जंगल ☐ आ. बादल ☐ इ. हिमालय ☐

ङ इस देश का प्राण किसे कहा गया है?

अ. प्रभुत्व ☐ आ. हिन्दुत्व ☐ इ. महत्त्व ☐

❄❄ **शैक्षिक गतिविधियाँ** ❄❄

राष्ट्रीय ध्वज बनवाना व उसमें रंग भरवाना तथा देश-भक्ति के गीतों पर संचलन का अभ्यास करवाना। भारत का मानचित्र बनाने का अभ्यास। आचार्य बच्चों को बताएँ कि संसार की प्रत्येक वस्तु पंच महातत्वों से बनी है। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश।

प्रेरक प्रसंग

(पराक्रमी मुन्दर)

मुन्दर, महारानी लक्ष्मीबाई की प्रिय सहेली तथा प्रमुख सलाहकारों में से एक थी। यह महारानी की स्त्री सेना की कमांडर तथा रानी के रक्षादल की नायिका थी। मुन्दर ने ब्रितानियों से हुए सभी युद्धों में रानी के साथ छाया की तरह रहकर भीषण युद्ध किये थे। ग्वालियर के अन्तिम दिन के युद्ध में भी मुन्दर ने रानी के साथ दोनों हाथों से तलवार चलाने का जौहर दिखाया। महारानी के शहीद होने के कुछ पहले ही मुन्दर ने वीर गति प्राप्त की थी। मुन्दर का अन्तिम संस्कार महारानी के साथ ही बाबा गंगादास की कुटिया पर हुआ था।

पाठ 2

गीता का उपदेश

(भाव संदेश)

महाभारत का युद्ध तय हो चुका था। भगवान कृष्ण युद्ध की भयानकता को समझते हुए शांति दूत बनकर कौरवों के पास गए। उन्होंने दुर्योधन से युधिष्ठिर के लिए आधा राज्य या फिर पाँच गाँव देने के लिए कहा। श्रीकृष्ण की बात सुनकर दुर्योधन ने पाण्डवों को सुई की नोक के बराबर भूमि भी देने से मना कर युद्ध करने का निश्चय किया। महाभारत का युद्ध कौरवों और पाण्डवों के बीच कुरुक्षेत्र की धरती पर हुआ था।

युधिष्ठिर और दुर्योधन की सेनाएँ कुरुक्षेत्र के मैदान में आ डटीं। अपने विपक्ष में पितामह भीष्म और आचार्य द्रोण आदि स्वजनों को देखकर अर्जुन ने गांडीव रख दिया तथा भगवान श्रीकृष्ण से कहा, "मैं युद्ध नहीं करूँगा।"

श्रीकृष्ण – हे अर्जुन! विषम परिस्थितियों में कायरता को प्राप्त करना, श्रेष्ठ मनुष्य के आचरण के विपरीत है। न तो यह स्वर्ग की प्राप्ति का साधन है और न ही मोक्ष का।

अर्जुन – बड़े ही शोक की बात है कि हम लोग बड़ा भारी पाप करने का निश्चय कर बैठे हैं तथा राज्य और सुख के लोभ से अपने स्वजनों का नाश करने को तैयार हैं।

श्रीकृष्ण – हे अर्जुन! भय मत कर, निर्भय होकर अपने कर्तव्य का पालन कर। यही श्रेष्ठ कर्म है। मन में किसी प्रकार के प्रश्न हों तो कर।

अर्जुन – भगवन्! मरने के बाद क्या होता है?

श्रीकृष्ण – जैसे इसी जन्म में जीवात्मा बाल, युवा और वृद्ध शरीर प्राप्त करता है वैसे ही जीवात्मा मरने के बाद नया शरीर प्राप्त करता है। इसलिए वीर पुरुष को मृत्यु से घबराना नहीं चाहिए।

अर्जुन – इस शरीरान्त के पश्चात् आत्मा क्या करता है?

श्रीकृष्ण – जैसे मनुष्य अपने पुराने वस्त्रों को उतारकर दूसरे नए वस्त्र धारण करता है वैसे ही जीव की मृत्यु के बाद आत्मा पुराने शरीर को त्याग कर नया शरीर प्राप्त करता है।

अर्जुन – भगवन्! क्या आत्मा भी नश्वर होता है?

श्रीकृष्ण – शस्त्र इस आत्मा को काट नहीं सकते, अग्नि इसको जला नहीं सकती, जल इसको गीला नहीं कर सकता और वायु इसे सुखा नहीं सकती। जन्म लेने वाले की मृत्यु निश्चित है मरने वाले का जन्म निश्चित है। अत: जो अटल है उसके लिए तुम्हें शोक नहीं करना चाहिए।

अर्जुन – वासुदेव! मृत्यु क्या है? जीवन का अन्त!

श्रीकृष्ण – परिवर्तन संसार का नियम है जिसे तुम मत्यु समझते हो, वही तो जीवन है। एक क्षण में तुम करोड़ों के स्वामी बन जाते हो, दूसरे ही क्षण में तुम दरिद्र हो जाते हो। मेरा-तेरा, छोटा-बड़ा, अपना-पराया, मन से मिटा दो फिर सब तुम्हारा है, तुम सबके हो।

अर्जुन – हे अन्तर्यामी! युद्ध का भविष्य क्या होगा?

श्रीकृष्ण – जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा हो रहा है, जो होगा, वह भी अच्छा होगा। तुम भूतकाल का पश्चाताप मत करो। भविष्य की चिन्ता न करो, वर्तमान चल रहा है।

अर्जुन – मैं इनकी गोद में खेला हूँ, इन्होंने मुझे और भी बहुत कुछ दिया है?

श्रीकृष्ण – तुम्हारा क्या गया जो तुम रोते हो? तुम क्या लाए थे, जो खो दिया? तुमने क्या पैदा किया था? जो नष्ट हो गया, न तुम कुछ लेकर आए, जो लिया यहीं से लिया। जो दिया यहीं पर दिया। जो लिया, इसी (भगवान) से लिया। जो दिया इसी (भगवान) को दिया।

अर्जुन – हमारे सामने सगे सम्बन्धी खड़े हैं, मैं इन्हें कैसे मारूँ?

श्रीकृष्ण – काम, क्रोध और लोभ ये जीव को नरक की ओर ले जाने वाले हैं, इसलिए इन तीनों का त्याग करना चाहिए। सगे संबंधी शब्द इस असार संसार का मोह माया है। मोह का त्याग करो।

अर्जुन – अपने स्वजनों एवं अन्य सम्बन्धियों को मारकर पाप लगेगा?

श्रीकृष्ण – सुख-दुःख, लाभ-हानि और जीत-हार भगवान के हाथों मे हैं, ऐसे भाव से कर्म करने पर मनुष्य को पाप नहीं लगता।

अर्जुन – यदि मेरी हार हो गई तो क्या होगा?

श्रीकृष्ण – केवल कर्म करना ही मनुष्य के वश में है, कर्म के फल में नहीं। इसलिए तुम कर्मफल की अशान्ति में नहीं फँसो तथा अपने कर्म का त्याग न करो। यदि तुम मृत्यु को प्राप्त हुए तो स्वर्ग, जीत गए तो राज्य प्राप्त करोगे।

समझने के लिए – महाभारत को धर्मयुद्ध कहते हैं। महाभारत युद्ध प्रारम्भ होने के पूर्व ही युद्ध संचालकों ने युद्ध के कुछ नियम बनाए थे। युद्ध के नियमों को पढ़िए। नियमों का पालन दोनों सेनाओं को करना अनिवार्य किया गया था।

युद्ध के नियम :-

1. प्रतिदिन सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक ही युद्ध होगा।
2. युद्ध समाप्ति के पश्चात् छल-कपट छोड़कर सभी प्रेम का व्यवहार करेंगे।
3. रथ वाला रथ वाले से, हाथी वाला हाथी वाले से और पैदल चलने वाला पैदल से ही युद्ध करेगा।
4. एक वीर के साथ एक ही वीर युद्ध करेगा।
5. भय से भागते हुए या शरण में आए हुए पर अस्त्र-शस्त्र का प्रहार नहीं किया जाएगा।
6. जो वीर निहत्था हो जाएगा। उस पर कोई अस्त्र-शस्त्र नहीं चलाएगा।
7. युद्ध में सेवक का काम करने वालों पर कोई प्रहार नहीं करेगा।

अभ्यास

1. शब्द ज्ञान

दूत–संदेश वाहक
शोक–दु:ख
विपरीत–उल्टा,
स्वजन – निकट सम्बन्धी
कीर्ति– यश,सम्मान
धारण करना–पहनना,
आसक्ति– लगाव
पश्चाताप – अफ़सोस
विषम – कठिन
नश्वर – जिसका अंत हो जाए
गांडीव–अर्जुन के धनुष का नाम
अन्तर्यामी–सब कुछ जानने वाले
प्रहार– अधिक शक्ति से मारना (चोट)

❄ संकलनात्मक एवं रचनात्मक मूल्यांकन ❄

2. मौखिक प्रश्न :-

क. गीता का संवाद किनके बीच हुआ?
ख. गीता का उपदेश किस स्थान पर दिया गया?
ग. पाण्डवों में बड़े भाई कौन थे?
घ. कौरवों में सबसे बड़ा कौन था?
ङ आपकी पुस्तक में युद्ध के कितने नियम दिए गए हैं?

3. अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

क. श्रेष्ठ मनुष्य के आचरण के विपरीत क्या है?
.....

ख. एक जन्म में जीवात्मा किस–किस प्रकार के शरीर प्राप्त करता है?
.....

ग. सांसारिक परिवर्तन में एकक्षण में कौन–कौन से परिवर्तन की बात कही गई है?
.....

घ. काम,क्रोध और मोह का क्या करना चाहिए?
.....

ङ किस प्रकार के भाव से कर्म करने पर मनुष्य को पाप नहीं लगता?

.....

4. रिक्त स्थानों में उपयुक्त शब्द भरकर वाक्यों को सार्थक बनाइए।

क. केवल कर्म करना ही मनुष्य के वश में है .....।

ख. काम, क्रोध और लोभ ये जीव को ..... ले जाने वाले हैं।

ग. जिसे तुम मृत्यु समझते हो वह तो. ..... है।

घ. यदि तुम मृत्यु को प्राप्त हुए तो ..... जीत गए तो ..... प्राप्त करोगे।

ङ सुख ..... लाभ ..... जीत ..... तीनों ..... के हाथ में है।

5. अधोलिखित शब्दों के कार्य उनके सामने लिख दीजिए –

क. शस्त्र ----------

ख. अग्नि ----------

ग. जल ----------

घ. वायु ----------

ङ आत्मा ----------

6. एक शब्द में उत्तर लिखिए –

क. संसार का एक महत्त्वपूर्ण नियम क्या है? ----------

ख. सुई की नोक भर भी भूमि न दूँगा? किसने कहा? ----------

ग. शांतिदूत बनकर कौन गया था? ----------

घ. गीता का उपदेश किसने दिया? ----------

ङ भगवान श्री कृष्ण शांतिदूत बनकर कहाँ गए थे? ----------

7. अधोलिखित प्रश्नों के सही विकल्प पर (✓) चिह्न लगाइए :-

क. जीव मृत्यु के पश्चात् क्या प्राप्त करता है?

अ. नए वस्त्र ☐ आ. नया शरीर ☐ इ. नई दुनियाँ ☐

ख. जन्म लेने वाले की क्या निश्चित है?

अ. मृत्यु ☐ आ. जिन्दगी ☐ इ. बन्दगी ☐

ग. काम, क्रोध और मोह ये जीव को किस ओर ले जाते हैं?

अ. स्वर्ग की ओर ☐ आ. नरक की ओर ☐ इ. चन्द्रलोक की ओर ☐

घ. मनुष्य पुराने वस्त्रों को उतारकर क्या धारण करता है?

अ. नए वस्त्र ☐ आ. नया शरीर ☐ इ. नया संस्कार ☐

ङ भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से किसको न त्यागने के लिए कहा है।

अ. कर्म ☐ आ. क्रोध ☐ इ. लोभ ☐

8. सार्थक शब्दों का आपस में मिलान कीजिए:-

क.	कर्म का सिद्धान्त	क.	दुर्योधन
ख.	पाण्डव	ख.	आत्मा
ग.	कौरव	ग.	अन्तर्यामी
घ.	जीव	घ.	अर्जुन
ङ	श्रीकृष्ण	ङ	श्रीमद्भगवद्गीता

❄❄ शैक्षिक गतिविधियाँ ❄❄

अष्टादश श्लोकी गीता का सस्वर वाचन करवाना, अर्थ समझाना। नैतिक एवं आध्यात्मिक अर्थ को व्यवहार में लाने के कार्य करवाना तथा पाठ से सम्बन्धित गीता के श्लोक, पाठ के अन्त में दिए गए स्थान पर लिखवाना।

प्रेरक प्रसंग

(देश-भक्ति)

जर्मनी सरकार ने फ्राँस के अधिकृत गाँवों में फ्रेंच के स्थान पर जर्मन भाषा पढ़ाने का आदेश दिया। उस समय फ्राँसीसी अत्यधिक दु:खी हुए। एक बार एक पाठशाला का निरीक्षण करने जर्मनी की रानी

ने एक फ्रेन्च कन्या की पढ़ाई से प्रसन्न होकर उससे पूछा, "कहो तुम्हें क्या इनाम दिया जाए?" उस कन्या ने कहा, "महारानी जी, मैं जो चाहूँगी क्या वह सचमुच आप मुझे देंगी।" उसकी सखी ने झिड़क कर कहा, "पगली! महारानी, क्या वस्तु नहीं दे सकतीं? वे हमारे देश की स्वामिनी हैं। धन सम्पदा की उन्हें क्या कमी है? ऐसा पूछकर तू उनका अपमान कर रही है।" महारानी ने फिर कन्या से कहा, "बताओ, तुम क्या चाहती हो?"

कन्या ने कहा, "मैं चाहती हूँ कि हमारी पाठशाला में जर्मन के स्थान पर हमारे देश की भाषा पढ़ाई जाए।" इस माँग को सुनकर महारानी एकदम चुप हो गईं। उन्हें चुप देखकर कन्या ने पूछा, "महारानी जी, आप चुप क्यों हो गईं? क्या मेरी प्रार्थना स्वीकार न होगी?" महारानी ने दूसरी कन्याओं को देखते हुए कहा, "तू सचमुच पगली है। तूने खाने,पीने,पहनने और पढ़ाई की वस्तुएँ क्यों नहीं माँगी?"

कन्या ने कहा, "महारानी जी, गुलाम शरीर और आत्मा के लिए हमारा शृंगार कोई अर्थ नहीं रखता।"

यह बात सुनकर रानी मन ही मन कन्या की देशभक्ति की प्रशंसा करने लगीं और कहा, "पुत्री तूने बहुत बड़ा इनाम माँगा है परन्तु मैं तुझे निराश नहीं करूँगी। मैं आज्ञा देती हूँ कि आगे से इस पाठशाला में जर्मन के स्थान पर फ्रेंच भाषा पढ़ाई जाए।"

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....